(१८) धन्य-धन्य हे गौतम गुरु...

धन्य-धन्य हे गौतम गुरु पुरुषार्थ तुम्हारा;
निश्चय भक्ति करी प्रभु की भव का लिया किनारा॥ टेक॥

शिष्य पाँच सौ पाँच पाये इस गौरव में भरमाये;
जिनशासन के तीव्र विरोधी मोह महातम छाये।
कहाँ छिपी थी महायोग्यता जिससे किया उजारा॥ 1॥

काललब्धि जब आई इन्द्र निमित्त बन आया;
जिनशासन के सारभूत इक मङ्गल छन्द सुनाया।
मङ्गलमय भवितव्य दिशा में तुमने चरण बढ़ाया॥ 2॥

वीरप्रभु के समवसरण का मानस्तम्भ निहारा;
मिथ्या मद गल गया तुम्हारा वेश दिगम्बर धारा।
योग्य शिष्य थे वीर प्रभु के झेली जिन-श्रुतधारा॥ 3॥

अनेकान्त वस्तु बताई स्याद्वाद के द्वारा;
वीरप्रभुजी मुक्ति पधारे तुमने केवल धारा।
धन्य-धन्य निर्वाण महोत्सव जग में हुआ उजारा॥ 4॥